Shri Krishna Stava

श्रीकृष्णस्तवः

Document Information

Text title : Shri Krishna Stava

File name : kRRiShNastavaH.itx

Category : vishhnu, nimbArkAchArya, krishna

Location : doc_vishhnu

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 28, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीकृष्णस्तवः

कृष्णं सर्वेश्वरं वन्दे पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ।
वृन्दावनेश्वरं ज्ञेयं सखिवृन्दैश्च सेवितम् ॥ १॥

सखिजनों के द्वारा परिसेवित पूर्णब्रह्म जो सनातन हैं ऐसे सर्वेश्वर वृन्दावनेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् के स्वरूप को जानना चाहिए। ऐसे उन प्रभु की हम अभिवन्दना करते हैं ॥ १॥

कदम्ब-मञ्जु-कुञ्जेषु कालिन्दीतट-संस्थितम् ।
राधया सह गोविन्दं नमामि व्रजजीवनम् ॥ २॥

कदम्ब की सुन्दर कुञ्जों में एवं श्रीयमुनाजी के पावन तटीय प्रदेश में विराजमान व्रज के एकमात्र सुशोभित गोविन्द भगवान् श्रीकृष्ण को अभिनमन करते हैं ॥ २॥

केशेन्द्रादि सदाराध्यं श्रुति कदम्बसंस्तुतम् ।
ऋषि-मुनीश्वराद्यैश्च समाराध्यं भजे हरिम् ॥ ३॥

ब्रह्मा-शङ्कर-इन्द्रादि देवों द्वारा निरन्तर आराधित एवं
श्रुति मन्त्रों द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है एवं ऋषि-मुनिजनों द्वारा जिनकी उपासना भी की जाती है, ऐसे हरि स्वरूप श्रीकृष्ण भगवान् का स्मरण भजन करते हैं ॥ ३॥

व्रजालि मानसे नित्यं शोभितं श्यामसुन्दरम् ।
माधुर्य-करुणापूर्णं स्मरामि सततं हृदा ॥ ४॥

व्रज गोपीजनों द्वारा अपने अन्तर्मानस में सदा सर्वदा सुशोभित एवं मधुरता करुणा के सागर श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्ण का अपने हृदय से अनवरत स्मरण करते हैं ॥ ४॥

सौरि-सकाश-कुञ्जेषु व्रजन्तं राधया सह ।
कोकिला-सारिका-नादैः हर्षितं माधवं भजे ॥ ५॥

यमुना के समीप कुञ्जों में सर्वेश्वरी प्रिया श्रीराधा के साथ पधारते हुए तथा कोयल-मैना के सुन्दर स्वर के श्रवण से अति हर्षित माधवरूप श्रीकृष्ण भगवान् का भजन करते हैं ॥ ५॥

गोवृन्दपृष्ठभागे च गच्छन्तं कृष्णमीश्वरम् ।

गोपवृन्दैः सदा सार्द्धं स्मरन्तं राधिकां भजे ॥ ६॥

गोमाताओं के पीछे-पीछे अपने गोपगणों के साथ सर्वेश्वरी श्रीराधिकाजी का स्मरण करते हुए परमेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् का भजन करते हैं ॥ ६॥

सतां सङ्गीतशास्त्रैश्च प्रगीतं माधवं भजे ।
अतीवकरुणापूर्णं विद्वद्भिः समुपासितम् ॥ ७॥

विविध विद्वानों के द्वारा उपासित किये गये परम करुणा सागर तथा सन्तों के सङ्गीत शास्त्र से प्रगीयमान माधव स्वरूप श्रीकृष्ण भगवान् का भजन करते हैं ॥ ७॥

क्वणन्तं मुरलीवाद्यमतीवमधुरं प्रियम् ।
भजेऽहं नित्यशः स्वान्ते श्रीकृष्णं राधया सह ॥ ८॥

अत्यन्त मधुर एवं प्रिय मुरली वाद्य को बजाते हुए नित्य नवकिशोरी रासेश्वरी श्रीराधिकाजी के सङ्ग सुशोभित श्रीकृष्ण भगवान् को अपने अन्तःकरण से प्रतिपल हम भजन करते हैं ॥ ८॥

कृष्णस्तवः सुधापूर्णः पराभक्तिप्रदायकः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ॥

श्रीकृष्ण भगवान् की पराभक्ति को प्रदान करने वाला अमृतरूप श्रीकृष्णस्तव सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् की कृपा से प्रस्तुत है ॥ ९॥

इति श्रीकृष्णस्तवः सम्पूर्णः ।

Proofread by Mohan Chettoor

Shri Krishna Stava

pdf was typeset on January 28, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*